"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 05, Issue: 01, Jan. – Feb. 2018 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) – 5.266

प्रगतिशील कविता में सामाजिक परिवर्तन

डॉ.ललिता राठोड
असोसिएट प्रोफेसर
बलभीम महाविद्यालय, बीड

नयी प्रगतिशील कविता भी अपने मूल रुप में सामाजिक कविता ही है, तथापि उसकी सामाजिकता उस सपाट और सूत्रात्मक सामाजिकता से काफी अलग है, जो प्रतिनिधी प्रगतिवादी कवियों में मिलती है। नयी प्रगतिशील कविता की सामाजिकता व्यक्तित्व के उचित विकास को भी महत्व देती है। यही कारण है कि यह व्यक्ति के सुख–दुख और उसकी समस्याओं से कतराई नहीं है।

प्रेमचंद यह मानते हैं कि श्रेष्ठ साहित्य और महान साहित्यकार स्वभावतः प्रगतिशील होते हैं। जहां तर प्रगतिशील साहित्य की ओर दुनिया के साहित्यकारों के आकृष्ठ होने का सवाल है वह सन 1935 के बाद है। प्रगतिशील साहित्य से प्रेरित होकर अंग्रेजी के प्रसिध्द लेखक ई.एम.फोस्टर ने लंदन में प्रगतिशीन लेखकों की बैठक सन 1935 में ली। इस बैठक में दो भारतीय लेखक सज्जाद जहीर और मुल्कराज आनंद उपस्थित थे। इससे प्रेरित होकर सन् 1936 में भारत में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की बैठक लखनउ में प्रेमचंद की अध्यक्षता में हुई। अध्यक्ष पद से बोलते हुए प्रेमचंद ने सभी भारतीय साहित्यकारों को इस नयी दृष्टि को स्वीकार करने का आग्रह किया। सन् 1937 में रवींद्रनाथ टैगोर की अध्यक्षता में इसकी दूसरी बैठक कोलकाता में हुई। इस प्रकार हिंदी कविता के क्षेत्र में प्रगतिशील आन्दोलन का प्रारंभ सन् 1936 के बाद दिखाई देता है। यह आन्दोलन साहित्य के प्रति सोद्देश्यवादी और यथार्थवादी चिन्तन की परम्परा का वर्तमान सोपान है। यह साहित्य मूलतः मानवतावादी और अग्रगामी है। यह मानता है कि मनुष्य के विकास की प्रक्रिया अनंतकाल तक चलती रहेगी। हिंदी में यह प्रगतिवाद से अधिक प्रभावी रुप में दिखाई देता है, इसलिए अनेक विद्वान प्रगतिवाद को ही प्रगतिशील मानते हैं।

साहित्य में प्रगतिशील चेतना का आगमन छायावादी रोमैंटिकता के विरुध्द शोषित–पीड़ित जनता का पक्ष लेने और उसके बारे में लिखने के लिए हुआ। इस तरह कविता में यथार्थ चित्रण और

जनता के दुख–दर्द तथा उसके संघर्षी के चित्रण को कविता की मुख्य विषय–वस्तु के रुप में प्रतिष्ठित किया गया। कविता की इस नयी चेतना से पन्त और निराला जैसे छायावादी कवि भी प्रभावित हुए और उन्होंने अपनी काव्य–वस्तु का नये सिरे से चयन और विस्तार किया।

'निराला' ने 'कुकुरमुत्ता' कविता के माध्यम से हमारी सौंदर्य चेतना को एक झटका दिया और कविता में फुहड यथार्थ की अभिव्यक्ति का एक नया मार्ग खोल दिया। उनकी कविता में जुझारु और विद्रोही प्रतीकों के साथ–साथ उदास प्रतीकों का भी सन्निवेश हुआ। उनकी इस मुद्रा का प्रभाव ग्रहण किया। पिछड़े जनपदों और गॉवों से महानगरों के वातावरण में आनेवाले साधन हीन अथवा अल्प साधन सम्पन्न युवा रचनाकार मानस ने सुविधाभोगी संम्पन्नता के प्रति मानसिक विद्रोहता का अनुभव किया।

प्रगतिशील कविता में मानव जीवन का व्यापक चित्रण दिखाई देता है। इस कविता में किन्ही महापुरुषों का नहीं, किन्हीं अवतारों का नहीं या किन्ही सामतों का नहीं तो साधारण आदमियों का चित्रण किया जाता है। साधारण आदमी इस कविता के पूर्व इतने सम्मान के साथ केन्द्रित नहीं था कि जितना इस प्रगतिशील कविता में दिखाई देता है। यह संघर्षी और क्रान्तिकारी मानवतावाद प्रगतिशील कविता की महत्वपूर्ण विशेषता है।

प्रगतिशील कविता तें मानवतावाद अधिक है। लेकिन प्रगतिशील कविता का मानवतावाद अन्य कविताओं में अंकित मानववाद से बिल्कुल भिन्न प्रकार का है। प्रगतिशील कविता का मानववाद भावना पर कम और चेतना पर आधारित है। यह मानववाद शोषित लोगों के प्रति सहानुभूति कम दिखाता है और उनके अधिकारों के लिए अधिक लड़ता है।

''हमारी हार का बदला चुकाने आयेगा
संकल्पधर्मा चेतना का रक्त प्लावित स्वर
हमारे ही ह्रदय का गुप्त स्वर्णाक्षर।''

प्रगतिशील कविता में पहली बार हिंदी कविता को यथार्थ की भूमि पर खड़ा किया। प्रगतिशील कविता का यह यथार्थ अत्यंत व्यापक है। वर्ग–विश्लेषण और सामाजिक अन्तर्विरोध का वैज्ञानिक आधार इस यथार्थ में है। इसी कारण ही यह कविता समाज–जीवन की अनेक बातों को गहराई के साथ प्रकट करने में सफल हो गयी है।

प्रगतिशील कविता का दायित्व सामाजिक है। मूल आवश्यकताओं की पूर्ति का अभाव, गरीबी, बेकारी, महॅगाबाई, अन्याय, अत्याचार, शोषण, दलित कथा, मजदूर, किसान की स्थिति, पारिवारिक

लगाव, नारी की स्थिति, बालक विवशता, दोषपूर्ण शिक्षा, भ्रष्ट पुलिस, संदिग्ध न्याय, निरर्थक स्वतंत्रता एवं खोखले समाजवाद के साथ ही साथ धार्मिक विकृतियों तथा व्यावसायिक सभ्यता और भ्रष्टाचार ने भी प्रगतिशील कवियों को अत्याधिक उद्वेलित और चिंतित किया है।

''रिश्तों से इनकार करने का मतलब
दुखों से बचना है
केवल सुख चाहते हैं जो लोग रिश्तों से
वे दुख मिलने पर
तोड़ना चाहते हैं अपने आपको रिश्तों से।''

प्रगतिशील कविता का सामाजिक दायित्व बड़ा विशिष्टतापूर्व, प्रभावोत्पादक, परिवर्तनशील रहा है। उन्होंने मानवीय संवेदना प्रस्तुत की है। मनुष्य को उसके असली परिवेश में प्रस्तुत करके उसके व्यक्तित्व के पुनःनिर्माण में संलग्न है, जिससे वह अपने दायित्व बोध से सजग होकर स्वस्थ समाज की समर्थ इकाई बन सके। प्रगतिशील कविता नए सुखमय समाज की कल्पना भी करती है। मानव के बीच प्रेम–बंधुत्व, परोपकार एवं शिवत्व की स्थापना करना तथा मानव को ईश्वरत्व के सौंदर्य से समन्वित करके खड़ा करना उसका प्रमुख लक्ष्य है। मानव सीमित दायरे से बाहर निकलकर मानव समाज सर्वांगीण विकास करें यही प्रगतिशील कवियों का लक्ष्य है। प्रगतिशील कवियों का सामाजिक दायित्व उल्लेखनीय प्रेरणास्पद रहा है। प्रगतिशील कविता आधुनिक जीवन मूल्यों के साथ ही सभी परिपार्श्वी का संस्पर्श करती है।

साहित्य की भूमिका, दुनिया के बदलाव की प्रक्रिया में यह है कि साहित्य समाज को वस्तुगत परिस्थितियों, सामाजिक सम्बधों, जीवन के यथार्थ और चेतना के स्वरुप का प्रामाणिक यथार्थवादी चित्रण करके समाज व्यवस्था और उनके अंतर्गत मनुष्य वास्तविकता का बोध–कराता है और दुसरी और क्रांतिकारी चेतना वर्ग और उसका सहायक शक्तियों कों पहचानते हुए क्रांतिकारी चेतना को मजबूत करने तथा संघर्ष की दिशा और दृष्टि देन का काम करता है।

''कविता आदमी का निजी मामला नहीं
एक दूसरे तक पहुंचने के लिए भावनाओं का पुल है।''

प्रगतिशील कवियों ने सामाजिक यथार्थ, शोषित और सर्वहारा के वर्णन को केन्द्र में रखकर सामाजिक सच्चाई को आक्रोश और तेवर के साथ अभिव्यक्त किया। नया खून, वसुधा, हंस आदि पत्रिकाएँ प्रगतिशील चेतना की वाहक बनी। शिवमंगल सिंह सुमन, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल,

त्रिलोचन, शमशेर, बहादूर सिंह प्रगतिशील के विशिष्ट कवि है। इनकी कविताओं में समता के मूल्य को केन्द्र में रखकर शोषक वर्ग की शोषण प्रक्रिया और शोषित वर्ग की भूख, विवशता और परिवर्तनकारी शक्ति का वर्णन मिलता है। सुमन में आक्रोश पूर्ण वक्तृत्व नागार्जुन में पैने व्यंग्य के साथ उजागर करने का नंगा करने का भाव, केदारनाथ अग्रवाल में श्रम सौंदर्य के साथ घर ऑगन से जुडे बिम्ब की प्रामाणिक सामाजिकता, त्रिलोचन में सामाजिक सच्चाई को सटीकता और साधक भाव से कहने की शक्ती और शमशेर में यथार्थ के मर्म को उद्‌घाटित करने की आश्चर्यजनक बिम्बात्मक क्षमता है।

''कितनी चिड़िया उडै अकास
दाना है धरती के पास''

अर्थात् गगनविहार करनेवाले कवि ठोस धरतीपर उतर आए और पीड़ितों तथा पोषितों का कविता में चित्रण होने लगा। प्रगतिशील कविता ने रुढ़ियों तथा पोषितों का कविता में चित्रण होने लगा। प्रगतिशील कविता ने रुढियों का विरोध किया, क्रांति की भावना का प्रचार किया, पूँजीवादी सभ्यता के प्रति अपना आक्रोश प्रकट किया।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. डॉ.नामवर सिंह–आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियॉ, द्वि.सं.
2. मुक्तिबोध–चॉद का मुँह टेढा है
3. भवानी प्रसाद मिश्र–परिवर्तन जिए
4. कुमार विकल –एक छोटी सी लढाई